आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 4 अंक : 7 मार्च, 2017 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

परिकल्पना एवं निर्देशन : कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत

कुलपति सन्देश

कृषि और पशुधन उत्पादन से आय दोगुनी करने का प्रभावी कदम है बजट

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

प्रिय, पशुपालक एवं किसान भाईयों और बहनों।

देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वित्त वर्ष 2017–18 के लिए संसद में एक उत्तम बजट प्रस्तुत किया हैं। सरकार का लक्ष्य है कि अगले पांच वर्षों में किसानों की आय को दोगुना किया जाए। इसके लिए सरकार ने फसली बीमा, सिंचाई, हैल्थ कार्ड, डेयरी जैसी फ्लैगशिप योजनाओं के लिए बड़े पैमाने पर वित्तीय प्रावधान किया है। सीमांत व छोटे किसानों को कृषि ऋण के लिए 10 लाख करोड़ राशि का प्रावधान किया है। किसानों द्वारा लिए गए सहकारी ऋण के लिए भी प्रधानमंत्री की ओर से घोषित 60 दिनों के ब्याज भुगतान में छूट का लाभ मिलेगा। इन प्रावधानों से किसानों की क्रय क्षमता बढ़ेगी और वे कृषि में बेहत्तर उत्पादन के लिए प्रेरित होंगे। बजट में सिंचाई योजनाओं के लिए 20 हजार करोड़, डेयरी विकास के लिए 8 हजार करोड़ और सूक्ष्म सिंचाई के लिए पांच हजार करोड़ रूपये आंवटित किये हैं। इससे फसलों का उत्पादन बढ़ेगा। पशुपालन से किसानों को अतिरिक्त आय होगी। कृषि और पशुपालन को कुशलता के साथ नवीनतम तकनीक का समावेश करते हुए किया जाए तो हम उत्पादन को दोगुना कर सकते हैं। यदि पशुपालक थोड़ी सावधानी व विवेक से काम लें तो कम खर्च में दुधारू पशुओं से अच्छा उत्पादन ले सकते हैं। बजट में शिक्षा रोजगार के लिए भी प्रावधान किया गया है। देश भर में 600 कौशल विकास केन्द्र खोले जायेंगे। प्रमुख कौशल क्षेत्रों में दुग्ध उत्पादन, कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन, जैविक उत्पादन, बॉयोगैस संचालक, जैविक खेती, औषधीय पौधों की खेती, हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी, मुर्गी और मत्स्य पालन शामिल हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने इस ओर पहल करके पशुपालन में युवाओं को कौशल विकास के छोटी अवधि के अनेक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम शुरू किए हैं। युवा इन पाठ्यक्रमों में ज्ञान प्राप्त कर अपने गांव या शहर में ही स्वरोजगार शुरू कर सकते हैं।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

केन्द्रीय कृषि कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह, केन्द्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलात के राज्य मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल, कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी एवं कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत द्वारा राजुवास में स्वामी विवेकानन्द की कांस्य प्रतिमा का अनावरण

मुख्य समाचार

स्वामी विवेकानन्द की कांस्य प्रतिमा का अनावरण व छात्र संघ कार्यालय का उद्घाटन

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह ने 18 फरवरी को विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानन्द की साढे छह फीट की कांस्य प्रतिमा का अनावरण कर विश्वविद्यालय छात्र संघ कार्यालय का उद्घाटन किया। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री सिंह ने कहा कि युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत स्वामी जी के आदर्शों को हमें अपने व्यक्तिगत जीवन में अनुसरण करके कार्य संस्कृति को अपनाना है। विश्वविद्यालय में स्थापित स्वामी जी की प्रतिमा और 100 फुट ऊँचा लहराता तिरंगा हमें निरंतर प्रेरित करते रहेंगे। समारोह के विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट मामलात के राज्य मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि 21वीं सदी भारत की होगी जिसमें युवाओं की अहम जिम्मेदारी है। राज्य के कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा युवाओं को सम्यक आचरण, संस्कार और व्यावहारिक जीवन जीने की प्रेरणा देती रहेगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक और तकनीकी संसाधनों में उत्कृष्टता हासिल की है। अतिथियों ने विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण भी किया।

17वीं ऑल इण्डिया एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटीज यूथ फेस्टिवल-2016-17 (एग्री यूनिफेस्ट) का आयोजन

देश के 54 कृषि एवं पशुचिकित्सा शिक्षा विश्वविद्यालयों का चार दिवसीय युवा महोत्सव 22–25 फरवरी तक राजुवास में आयोजित किया गया, जिसमें करीब 1500 छात्र–छात्राओं ने सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं में भाग लिया। समारोह का उद्घाटन सीकर के सांसद सुमेधानंद सरस्वती एवं लालेश्वर महादेव मंदिर के अधिष्ठाता संवित सोमगिरी महाराज ने किया। उद्घाटन सत्र में एस.के.आर.ए.यू. कुलपति प्रो. बी. आर. छींपा और एम.जी.एस.यू. कुलपति प्रो. भागीरथ सिंह, विश्वविद्यालय की प्रथम महिला श्रीमती अरूणा गहलोत, मेयर नारायण चौपड़ा, यू.आई.टी. अध्यक्ष महावीर रांका ने भी शिरकत की। इस अवसर पर अतिथियों द्वारा विश्वविद्यालय ध्वज का ध्वजारोहण भी किया गया। संभागियों द्वारा एक ऐतिहासिक सांस्कृतिक रैली भी निकाली गई। समापन सत्र में मुख्य अतिथि ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री राजेन्द्र राठौड़, ऊर्जा राज्यमंत्री श्री पुष्पेन्द्रसिंह राणावत, राज्य युवा बोर्ड के अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सैनी और जोधपुर सांसद श्री गजेन्द्रसिंह शेखावत, बीकानेर रेन्ज के पुलिस महानिदेशक श्री बिपिन कुमार पाण्डे, कुलपति प्रो. ए.के.गहलोत ने विजेताओं को पुरस्कृत किया। युवा महोत्सव के आयोजन अध्यक्ष प्रो. एस.सी. गोस्वामी व आयोजन सचिव डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौड़ थे।

सामुदायिक रेडियो सेवा प्रारम्भ करेगा राजुवास

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा शैक्षणिक एवं सामाजिक सरोकारों के मद्देनजर बीकानेर में सामुदायिक रेडियो सेवाएं शुरू की जाएगी। राज्य में मछली पालन को बढ़ावा देने के लिए सूरतगढ़ में विश्वविद्यालय का "सेन्टर ऑफ एक्सीलैंस इन फिशरीज" की स्थापना की जाएगी। प्रसार शिक्षा परिषद् की तीसरी बैठक में इस आशय के प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत ने कहा कि संचार के सशक्त माध्यम सामुदायिक रेडियो सेवाएं एफ.एम. रेडियो की तर्ज पर होंगी जिसका लाभ 10–15 किमी. के दायरे में आने वाले सभी कृषकों और पशुपालकों को भी मिलेगा।

स्वचालित मौसम स्टेशन होंगे स्थापित

वेटरनरी विश्वविद्यालय राज्य में स्थित 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर स्वचालित मौसम स्टेशन स्थापित करके जलवायु परिवर्तन के कारण पशुधन उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभावों पर अपनी रणनीति तैयार करेगा। अनुसंधान परिषद् की तीसरी बैठक में इस आशय का निर्णय किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गहलोत ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक इस केन्द्र में जलवायु परिवर्तन के आंकडों का विश्लेषण करके पशुओं में होने वाले शारीरिक क्रियात्मक मापदंडों के आधार पर पशुधन उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करके अपनी रणनीति बनाएंगे।

कृषि विज्ञान कांग्रेस-2017 बेंगलूरू में राजुवास की सहभागिता

कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बेंगलूरू द्वारा 21–24 फरवरी, 2017 को आयोजित 13वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस–2017 में प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास द्वारा एक प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन के वैज्ञानिक तौर–तरीकों को मॉडल, चार्टस, पैनल्स, रंगीन चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया।

राजुवास में स्थापित होगा 100 किलावॉट का सौर ऊर्जा संयंत्र

राजुवास की 7 फरवरी को आयोजित 17वीं प्रबंध मण्डल बैठक में वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोत का "सौर ऊर्जा केन्द्र" बीकानेर में स्थापित करने के निर्णय को मंजूरी दी गई। कुलपति प्रो. गहलोत ने बताया कि 100 के.वी.ए. विद्युत क्षमता स्टेशन पर 80 लाख रू. राशि की लागत आएगी, केन्द्रीय नवीन और नवीकरण ऊर्जा मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा इस पर अनुदान प्रदान किया जाएगा। बोम सदस्यों ने राजुवास में शिक्षण, शोध और प्रसार सेवाओं के सुदृढीकरण के लिए प्रशासनिक ढांचे, वित्तीय कुशलता और कामकाज को प्रभावी बनाने के लिए सुझाव प्रस्तुत किए हैं। बैठक में सूरतगढ़ विधायक श्री राजेन्द्र सिंह भादू, वी.सी.आई. प्रतिनिधि डॉ. अमित नैण, श्री बलराम सहारण, श्रीमती कामना चौधरी, प्रो. ए.पी. व्यास, राज्य के पशुपालन निदेशक डॉ. अजय गुप्ता और आर.सी.डी.एफ. प्रतिनिधि डॉ. भारती उपनेजा ने शिरकत की। कुलसचिव श्री बी.आर. मीणा, वित्त नियंत्रक श्री अरविन्द बिश्नोई, फैकल्टी चेयरमैन प्रो. जी.एस. मनोहर, प्रो. ए.पी. सिंह सहित विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर भी उपस्थित थे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

वीयूटीआरसी, चूरू द्वारा 8, 10, 11, 21, 23 एवं 28 फरवरी, 2017 को गांव रामपुरा बेरी, लोसना बड़ा, चूरू, बंडवा, अजीतसर एवं सावा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 199 पशुपालकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ केन्द्र द्वारा 285 पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 1, 2, 4, 6 एवं 25 फरवरी को गांव श्योपुरा,लालगडिया, 6–7 एफडीएम, मानेवाला एवं हिजंरासर गांवो में तथा 8–9, 16–17 एवं 22–23 फरवरी को केन्द्र परिसर में पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 285 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वीयूटीआरसी, सिरोही द्वारा 10, 13, 16, 18 एवं 23 फरवरी, 2017 को पामेरा, अरठवाड़ा, पाडीव, सिंदरत एवं मंडार गांव में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 146 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

वीयूटीआरसी, बाकलिया– लाडनूं द्वारा 10, 14, 20 एवं 21 फरवरी को गांव रिडमलास, रायधना, दुजार एवं कुशालपुरा तथा 22 फरवरी को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 120 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 10, 14, 18, 20 एवं 21 फरवरी को गांव छाबडिया, खवास, कंराटी, मुहामी एवं कल्याणीपुरा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 118 महिला पशुपालकों सहित कुल 218 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 9, 13, 15, 17, 21 एवं 24 फरवरी को गांव गेहुवाड़ा, रामा, समोटा का ओडा, माल, अम्बापुरा एवं हरगंजी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 229 पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

वीयूटीआरसी, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा फरवरी माह में आयोजित 10 पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 248 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण सम्पन्न

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 15, 16, 17, 18, 20, 21, 22 एवं 23 फरवरी को गांव इंदोकिया, पालड़ा, लेहन, बिछारस, देवली भांची, तरन, बिछपुरा एवं चंदलाई गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 237 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा 4, 10, 13, 15, 17, 18, 20, 22 एवं 25 फरवरी को गांव डीकोली, खजुरी, सुखपुरा, मंडानिया, नालोदी, मांदलिया, ब्रिजालिया, गरदाना एवं कंदफल गांवों में आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में 277 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा 353 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वीयूटीआरसी, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 9, 10, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 20 एवं 22 फरवरी को रघुनाथपुरा, सहनवा, पारलिया, लालजी का खेड़ा, भाटोली बागरियान, भूत खेड़ा, चिकारड़ा, भाटोली गुजरान, सांरगपुरा, सावा गांवों में आयोजि प्रशिक्षण शिविरों में 353 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा प्रशिक्षण

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 8, 9, 14, 20 एवं 22 फरवरी को गांव जागीरदार का पुरा, नेकपुर, टांडा, पंचीपुरा एवं रूपसपुर गांवों में तथा 17 फरवरी को केन्द्र परिसर में आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में 204 पशुपालकों ने भाग लिया।

लूनकरनसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण सम्पन्न

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरनसर जिला बीकानेर द्वारा 13 एवं 14 फरवरी को धीरेरा एवं हंसेरा में एक दिवसीय तथा 9–10 एवं 27–28 फरवरी को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 127 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी एवं प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 7, 10 एवं 13 फरवरी को गांव चाईया, बडबीराना एवं कुंजी गांवों में एक दिवसीय तथा दिनांक 15–18 फरवरी को कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर में तीन दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 131 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशुपालन नए आयाम
फार्म–4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	:	बीकानेर (राज.)
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	प्रकाशक का नाम	:	प्रो. आर. के. धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर
4.	मुद्रक का नाम	:	प्रो. आर. के. धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
5.	संपादक का नाम	:	प्रो. आर. के. धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्रों के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	लागू नहीं

मैं प्रो. आर. के. धूड़िया एतद्द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 01–3–2017

(प्रो.आर.के.धूड़िया)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

पशुओं में हिडकाव (रेबीज) होने पर पशुपालक ध्यान दें

हिड़काव एक विषाणुजनित जानलेवा रोग है जो कि सभी प्रकार के पशुओं को प्रभावित करता है और पशुओं से मनुष्य में भी फैल सकता है। इस रोग को अंग्रेजी भाषा में ''रेबीज'' के नाम से भी जानते हैं। सामान्यतः यह रोग रेबीज प्रभावित कुत्ते के काटने से स्वस्थ पशु में अथवा मनुष्य में फैलता है। समय पर सावधानी न बरतने और लक्षण दिखने के बाद यह रोग शत–प्रतिशत जानलेवा है। रेबीज प्रभावित पशु से दूसरे पशु भी प्रभावित हो सकते हैं। अतः प्रभावित पशु की पहचान आवश्यक हो जाती है ताकि अन्य पशुओं में इस रोग का फैलाव रोका जा सके। रेबीज रोग की पहचान लक्षणों के आधार पर आसानी से की जा सकती है। पशु खाना–पीना छोड़ देता है, बार–बार पेशाब करता है, पशु चौकन्ना हो जाता है, अपना सिर दीवार, पेड़ अथवा खूंटे इत्यादि से टकराता है, मिट्टी खोदने और खाने का प्रयास करता है, मुहं से लार आती है, आवाज में बदलाव आ जाता है और अंत में लकवा होकर कुछ दिनो में मर जाता है। यदि रेबीज से प्रभावित पशु अन्य स्वस्थ पशु या मनुष्य को काट लेता है तो ये रोग उनमें भी फैल जाता है। अतः इस अवस्था में पशुपालक को निम्न सावधानियां बरतनी आवश्यक है :–

- रेबीज प्रभावित पशु की जल्दी से पहचान कर उसे अन्य स्वस्थ पशुओं से पृथक कर दूर बांध देना चाहिये।
- प्रभावित पशु को अन्य पशुओं के चारे पानी के संपर्क में आने से रोकना आवश्यक है।
- रेबीज प्रभावित पशु के लार के संपर्क में आने से बचना चाहिये क्योंकि विषाणु का फैलाव लार से ही होता है।
- इलाके में पागल कुत्तों अथवा अन्य पशुओं की पहचान कर प्रशासन को सूचित करना चाहिये ताकि जल्दी से जल्दी फैलाव पर नियंत्रण किया जा सके।
- रेबीज प्रभावित कुत्ते, बिल्ली, लोमड़ी इत्यादि के संपर्क में आने पर पशु को पशुचिकित्सक की देख–रेख में रेबीज के टीके लगवाने चाहिए।

यदि किसी पशुपालक को बाद में जानकारी हो कि वह रेबीज प्रभावित पशु के संपर्क में आया था तो तुरन्त मेडिकल चिकित्सक से मिलकर मार्गदर्शन प्राप्त कर उचित कार्यवाही करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
iHkkjh vf/kdkjh] ,iDl lUVj] jktoki ¼ek- 9460073909½

दुधारू पशुओं में ब्यांत से सौ महत्वपूर्ण दिन

गाय का ब्यांत कुल 305 दिन का माना जाता है। इनमें से पहले दिन खींस के और बाकी 300 दिन दूध के होते हैं। संकर व देशी नस्ल की गायों के संदर्भ में दो मुद्दों पर दूध व्यवसाय के नफा–नुकशान काफी हद तक निर्भर करता है।

- प्रत्येक वर्ष में एक ब्यांत
- दो ब्यांतों में 13 से 14 महीनों का अन्तर

इनमें से ब्याहने से पहले के 30 दिन और ब्यांहने के बाद के 70 दिन महत्वपूर्ण होते हैं। इन 100 दिनों में दुधारू पशुओं के शरीर में विभिन्न महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाएं होती हैं, जैसे कि–

- ब्यांहने की तैयारी पूर्ण की जाती है।
- ब्यांहने के बाद क्षमतानुसार दूध देने की तैयारी पूर्ण की जाती है।
- दोबारा ग्याभिन रहने की तैयारी पूर्ण की जाती है।

ब्यांहने से पहले के 30 दिन में गाय–भैंस को दूध तो नहीं देना होता परन्तु बछड़े के वजन में और शारीरिक वृद्धि में तेजी से बढ़ोतरी होती है तथा ब्यांहने के बाद में दूध देने के लिए उसके शरीर में महत्वपूर्ण प्रक्रियाएं तेजी से होती रहती हैं। इसलिए प्रोटीन, ऊर्जा, मिनरल्स इत्यादि पोषक घटकों की मां के शरीर में अतिरिक्त मात्रा की जरूरत होती है। आमतौर पर यह देखा गया है कि जब गाय–भैंस दूध नहीं देती है या सुखायी जाती है तब किसान उसकी तरफ बहुत कम ध्यान देता है, खासकर उसकी खुराक पर जिसके परिणाम आगे चलकर ब्यांहने में तकलीफ होना, जेर अटकना, मिल्क फीवर होना, कम वजन का बछड़ा पैदा होना, अपेक्षा से कम दूध का उत्पादन होना, दूध में उतार–चढ़ाव होना, मद चक्र में गड़बड़ी (हीट) होना आदि दिखाई देते हैं।

इन गडबड़ियों से बचने के लिए क्या करें!

- ब्यांहने से पूर्व के 30 दिनों में ग्याभिन पशु को संतुलित पशु आहार अवश्य खिलाएं। पशु को हर रोज 200 ग्राम पचनीय प्रोटीन एवं 1500 कि.कैलोरी ऊर्जा मिलनी चाहिए।
- पशुओं के पेट में कीड़े मारने की दवा या परजीवी नाशक दवा (डीवार्मर) अवश्य दीजिए।
- ब्यांहने के बाद शरीर में कैल्सियम की कमी नहीं होनी चाहिए, इसलिए पशु को मिनरल मिक्सचर खिलाना चाहिए।
- एल्यूमिनियन क्लोराइड 100 ग्राम, मैग्नीशियम सल्फेट 100 ग्राम अथवा कैल्सियम क्लोराइड 100 ग्राम, मैग्नीशियम सल्फेट 100 ग्राम आदि मिलाकर यह मिश्रण कम से कम आखिरी के 15 दिन तो देना ही चाहिए।
- आखिरी के 8 दिन पूंछ, बच्चादानी का मुंह और पिछला हिस्सा हर रोज सफाई से धोना चाहिए। पशु को साफ–सुथरी, हवादार खाली जगह पर बांधना चाहिए।

ब्यांहने के बाद के 70 दिनः

ब्यांहने से बाद के दिनों में जिस हिसाब से दूध बढ़ता है उसकी अपेक्षा से पशु को खुराक नहीं मिल पाती है। इस वक्त दूध की बढ़ोतरी शरीर में संचित चर्बी पर निर्भर करती है, ऐसे में ब्यांहने से पहले बॉडी स्कोर (3.5 से 4) तथा बाद का स्कोर (2.8 से 3.2) बहुत महत्वपूर्ण होता है। जब छाती की तीन से ज्यादा पसलियां दिखने लगती हैं तब 10 प्रतिशत तक दूध घटता है, साथ ही साथ गर्मी (हीट) में आने में देरी होती हैं। गाय–भैंस जब अधिकतम दूध दे रही होती है, उन दिनों उसे ऊर्जा–प्राटीन से भरपूर (हाई एनर्जी–हाई प्रोटीन) आहार देना चाहिए। ऐसे में फुल फैट सोयाबीन एक बहुगुणी, उपयुक्त खाद्य घटक साबित हुआ है। फुल फैट सोयाबीन में 38 से 40 प्रतिशत प्रोटीन, 18 से 20 प्रतिशत फैट तथा 3700 कैलोरी ऊर्जा होती हैं। ब्यांहने से बाद के 70 दिनों का आहार, रखरखाव अच्छे से होना चाहिए जिससे पशुओं को बीमारियों से बचाया जा सके तथा दूध का उत्पादन बढ़ाया जा सके। ब्यांहने के बाद 34 दिनों से 45 दिनों तक दूध में लगातार वृद्धि होती है। जिस दिन सबसे अधिक दूध मिलेगा उस दूध की संख्या को 245 से गुणिए, जो संख्या आएगी इससे वह पशु उस ब्यांत में कितना दूध देगा इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है। इस तरह ब्यांत के पूर्व 30 दिन तथा बाद के 70 दिन (कुल सौ दिन) पशुपालन व्यवसाय के नफा–नुकसान को तय करते हैं। इन दिनों में पशु पालक को अपने पशु पर विशेष ध्यान देकर व्यवसाय को अधिक लाभकारी बनाने की हर संभव कोशिश करनी चाहिए।

गाय–भैंस में जेर अटकना :

सामान्य रूप से ब्यांहने के बाद 2 से 8 घंटों में जैर अपने आप गिर जाती है। किसी भी कारणवश जेर के अटकने से बच्चेदानी पर बुरा असर होता है।। गाय–भैंस का दूध उसकी क्षमता की अपेक्षा घट जाता है। उसका गर्मी (हीट) चक्र बिगड़ता है। बच्चादानी में गड़बड़ी होने के कारण दुबारा ग्याभिन रहने में तकलीफ होती है।

जेर क्यों अटकती है!

सेहत की कमजोरीः– कमजोर गाय–भैंस की सारी ताकत बच्चे को बच्चेदानी में से बाहर निकालने में खर्च हो जाती है। बाद में ऐसा पशु जेर को बाहर फेंकने में असमर्थ होता है।

शरीर में मिनरल्स (खनिजों) की कमीः– कैल्सियम, फॉस्फोरस, सेलेनियम, कॉपर, आयोडीन इत्यादि जरूरी मिनरल्स की शरीर में कमी होना भी जेर अटकने का एक कारण बन सकता है।

ब्यांहने से पूर्व बच्चेदानी में कोई संक्रमण होनाः– दिन पूरे होने के पहले या बहुत बाद में ब्यांहना, बच्चादानी में गर्भ की अवस्था में बदलाव, जुड़वा बछड़ों का जन्म इत्यादि कारणों से भी जेर गिरने में रूकावट होती है।

जेर नहीं अटके इसके लिए क्या करें!

- ✓ ब्यांहने के दो महीने पहले से गाय–भैंस को प्रतिदिन 2 से 3 किलोग्राम संतुलित पशु आहार खिलाएं। इससे पशु की सेहत अच्छी बनती है।
- ✓ मिनरल्स की अतिरिक्त जरूरत को पूरा करने के लिए रोजाना के आहार में अच्छी कम्पनी का मिनरल मिक्स्चर (30 से 40 ग्राम प्रति पशु) अवश्य दें।
- ✓ ब्यांहने के तुरन्त बाद गाय–भैंस को गुड का पानी खिलाएं (आधा किग्रा गुड एवं 10 लीटर पानी)
- ✓ ब्यांहने के एक घण्टे के अन्दर बछड़े को खींस ही पिलाना चाहिए। जेर के गिरने तक खींस पिलाने की राह देखना बछड़ा और मां दोनों के लिए हानिकारक है। एक घण्टे के अन्दर बछड़े को खींस पिलाने से जेर गिरने में भी मदद होती है।

जेर अटकने पर क्या करें?

- ➢ ब्यांहने के 12 घण्टे बाद भी जेर अटकी है तो इसे हाथ से निकालने का प्रयास नहीं करें।
- ➢ ब्यांहने के 36 से 48 घण्टे में बच्चादानी का मूंह पूरी तरह बंद हो जाता है। बच्चादानी का मुंह बंद होने से पहले उसमें पशु चिकित्सक के हाथों नली द्वारा ''एन्टीबायोटिक'' दवाई डालें।
- ➢ अनुभवी पशुचिकित्सक से सलाह कर कम से कम पांच दिन दवाईयां दीजिए।

डॉ. कमल पुरोहित, डॉ. मुनेश पुष्प (मो. 8890257135)
वीयूटीआरसी, बाकलिया, (लाडनं), नागौर

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर

प्रसार शिक्षा निदेशालय के वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर की स्थापना अप्रेल 2016 में की गयी। राज्य सरकार द्वारा धौलपुर शहर से 3 कि.मी दूर ताल ओडेला ग्राम में चारागाह की 3 बीघा 19 बिस्वा जमीन पर वर्ष 2015 में केन्द्र खोलने के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय को हस्तान्तरित की गयी। इस भूमि में विश्वविद्यालय द्वारा लगभग 120X50 वर्गमीटर क्षेत्रफल में भवन का निर्माण कर केन्द्र की स्थापना की गयी। केन्द्र पर विशेष तौर पर पशुपालकों के लिए प्रशिक्षण हॉल, आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशाला तथा पुस्तकालय कक्ष भी है। वर्तमान में केन्द्र पर दो टीचिंग एसोसिएट तथा प्लेसमेंट एजेन्सी द्वारा एक पशुधन सहायक और दो सहायक कार्मिकों की सेवाएं उपलब्ध है। केन्द्र के वैज्ञानिक और पशुचिकित्सा विशेषज्ञ जिले के पशुपालक और कृषकों को पशुचिकित्सा के नवाचारों, नवीन तकनीक का प्रचार प्रसार कर पशुपालन एवं पशु उत्पादन को बढ़ावा देना तथा पशुओं को वैज्ञानिक तरीके से लालन–पालन के सम्बन्ध में प्रशिक्षणों का आयोजन कर जानकारी देते है। केन्द्र द्वारा गांवों में पशुपालन सम्बन्धित प्रारम्भिक सर्वे, प्रशिक्षण और पशुस्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष केन्द्र द्वारा 58 प्रशिक्षण शिविरों तथा 9 विचारगोष्ठी का आयोजन कर महिला पशुपालकों सहित कुल 2885 पशुपालकों को लाभान्वित किया गया है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मार्च, 2017

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	बीकानेर, सीकर, कोटा, उदयपुर, नागौर, जोधपुर, हनुमानगढ़ , श्रीगंगानगर, जैसलमेर
माता रोग (चेचक)	भेड, बकरी, ऊँट	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, सिरोही, पाली, जोधपुर
खुरपका–मुँहपका रोग (FMD)	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	बाड़मेर, चूरू, दौसा, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, नागौर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, कोटा
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, सीकर, अलवर, भीलवाड़ा, हनुमानगढ़, कोटा, बारां, झुंझुनूं, टोंक, जोधपुर, जैसलमेर
लँगड़ा बुखार (Black Quarter)	गाय	बीकानेर, हनुमानगढ़, चित्तौड़गढ़, जयपुर, नागौर
बोटूलिज्म	गाय	जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर
गलघोंटू	भैंस, गाय	अलवर, दौसा, अजमेर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जयपुर, हनुमानगढ़, सीकर, चित्तौडगढ़, पाली, टौंक, भरतपुर, उदयपुर, धौलपुर
एन्जूटिक अबोर्शन (क्लेमाईडोफिला संक्रमण)	भेड़	बीकानेर, नागौर, हनुमानगढ़
बबेसियोसिस (खून मूतना)	गाय, भैंस	चित्तौड़गढ़, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
एनाप्लाज्मोसिस	भैंस	भरतपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
अन्तः परजीवी (एम्फीस्टोमीयेसिस, फेसियोलियेसिस)	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, उदयपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, सीकर, बूंदी
सर्रा (तिबरसा)	गाय, भैंस, ऊंट	धौलपुर, भरतपुर, सीकर
रानीखेत रोग (Ranikhet disease)	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्शियस ब्रोंकाइटिस (Infectious Bronchitis)	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. जी.एस. मनोहर, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी भेड़ वंश को पहचानें
चोकला भेड़ : गौरव प्रदेश का

चोकला नस्ल की भेड़ मुख्यतया राजस्थान के चूरू, झुन्झुनू तथा सीकर जिलों में पाई जाती है। इसके अलावा बीकानेर, जयपुर तथा नागौर के सीमान्त क्षेत्रों में भी पाई जाती है। इस नस्ल की भेड़ छोटे से मध्यम आकार की होती है। गर्दन तक लाल भूरा या काला भूरा चेहरा, इस नस्ल की पहचान है। चेहरे पर बाल/ऊन नहीं होती। ऊभरी हुई नाक जिसे ''रोमन नोज'' कहते हैं, भी इसकी मुख्य पहचान है। इसके कान छोटे मध्यम नलीदार होते हैं तथा पूंछ पतली होती है। नर व मादा दोनों में ही सींग नहीं पाए जाते। शरीर पर ऊन घनी तथा अपेक्षाकृत अच्छी गुणवत्ता वाली होती है, इसी कारण इसे राजस्थान की मैरीनो भी कहा जाता है। सामान्यतया इसकी ऊन को अन्य प्रकार की ऊन में मिला कर गलीचों की गुणवत्ता को बढ़ाया जाता है। इसकी ऊन के रेशों का व्यास लगभग 30 माइक्रॉन तथा लम्बाई लगभग 6 सेमी. होती है तथा मेड्यूलेशन 30 प्रतिशत होता है। लगातार चयन तथा उन्नत प्रबंधन द्वारा इसके शारीरिक भार में काफी सुधार हुआ है जो कि मांस उत्पादन की दृष्टि से लाभदायक है। छः माह की उम्र पर प्रथम कतरन से लगभग 1–1.5 किलो ग्राम ऊन प्राप्त हो जाती है। राजस्थान–सरकार उन्नत किस्म के मेढ़े नस्ल सुधार हेतु किसानों को हर साल वितरित करती है। अच्छी गुणवत्ता की ऊन तथा शारीरिक भार में सुधार के कारण अधिक मांस उत्पादन, किसान भाईयों के लिए अधिक आय का स्त्रोत साबित हो सकता है।

सफलता की कहानी
पशुपालन से 5 लाख रुपये की वार्षिक आय लेते हैं युवा जगदीश

पशुपालन सदा से ही राजस्थान के किसानों के लिए कृषि के समानांतर आय का साधन रहा है। वर्तमान में युवाओं को बेरोजगारी की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में पशुपालन क्षेत्र में स्व–रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। पशुपालन व्यवसाय को आय का स्रोत बनाकर सफल हुए युवा जगदीश सिंह राजपूत ने कई युवाओं के लिए उदाहण प्रस्तुत किया है। जगदीश सिंह नागौर जिले के लाडनूं तहसील के बादेड़ गांव के निवासी हैं, इनके पिता श्री भगवानसिंह के पास 50 बीघा जमीन है। 32 वर्षीय जगदीश ने परम्परागत कृषि के साथ पशुपालन व्यवसाय शुरू किया और वे 4 से 5 वर्ष में ही ये इसमें काफी सफल हुए हैं। वर्तमान में इनके पास 12 भैंसे, 18 पाड़िया, 4 पाड़े (नर भैंसा), 3 गायें, 20 बकरियां व एक बकरा है। एक भैंस प्रतिदिन 11 लीटर के लगभग दूध देती है। प्रतिदिन 1 क्विंटल 20 किलो दूध उत्पादन होता है। 1 पाड़े को 10 हजार में बाजार में विक्रय करते हैं। पशुपालन से प्रतिवर्ष 5 लाख रू. तक की आमदनी प्राप्त करते हैं। जगदीश अपने पशुओं की देखभाल स्वयं करते हैं। समय–समय पर एफएमडी, गलघोंटू आदि के लिए टीकाकरण करवाते हैं। कृमिनाशी दवाओं का उपयोग करते हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू केन्द्र से लगातार सम्पर्क में रहकर पशु प्रबंधन, पशु आहार, अजोला आदि के विषय में समय–समय पर प्रशिक्षण प्राप्त करते रहते हैं। जगदीश जैसे जागरूक युवा पशुपालक वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं।

सम्पर्क – श्री जगदीशसिंह राजपूत (मो.9587828561) लाडनूं, नागौर

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

दूधारू पशुओं से अधिक उत्पादन कैसे लें

प्रिय, पशुपालक व किसान भाई–बहनों!

बंसत आगमन के साथ जाड़े की विदाई से पशुधन को राहत मिलती है। बदलते मौसम में पशु स्वस्थ रहे और दूध भरपूर मिले, इस ओर ध्यान देने की जरूरत है। दुधारू पशुओं का उचित प्रबंधन और संतुलित आहार का प्रबंधन करने वाले पशुपालक सदैव लाभ की स्थिति में रहते हैं। दुधारू पशुओं को रोजमर्रा के जीवन के लिए आहार की व्यवस्था करना तथा दूसरे पशुओं में दूध एवं मांस का उत्पादन बढ़ाने के लिए उत्पादक राशन आहार की अलग अलग जरूरत होती है। यदि पशु हरा चारा खिलाने से ही 5–6 लीटर दूध प्रतिदिन दे रहा है तो उसे अतिरिक्त दाना खिलाने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए जीवन निर्वाह आहार पर्याप्त है। दुधारू पशु की दूध उत्पादन क्षमता पर उत्पादक राशन की मात्रा के लिए जीवन निर्वाह राशन के साथ ही प्रत्येक 2.5 से 3 लीटर दूध पर 1 किग्रा दाना दिया जाना चाहिए। इसके अनुसार पशुपालक अपने दुधारू पशु के राशन की मात्रा तय कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त खनिज लवण, नमक तथा पानी दिया जाना चाहिए। अपने पशुओं में सही समय पर बीमारी की रोकथाम करें और आवश्यक टीकाकरण करवाएं। पशुओं में अंदरूनी और बाह्य परजीवियों से बचाव के उपाय भी करने चाहिए। साफ–सुथरा चारा–पानी व अच्छी देखरेख से ही पशु की दुग्ध की उत्पादन क्षमता में वृद्धि की जा सकती है तथा इस व्यवसाय से लाभ उठाया जा सकता है। **–प्रो. आर.के.धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **मार्च, 2017** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायं 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**प्रो. आर.के. धूड़िया** **9414283388** निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर	किसानों की आय बढ़ाने में कौशल विकास कार्यक्रमों की उपयोगिता	02.03.2017
2	**प्रो. सुनील मेहरचंदानी** **9351205627** माइक्रोबायोलाजी विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	प्रदेश को एफ.एम.डी मुक्त बनाने में पशुपालक कैसे करें सहयोग	09.03.2017
3	**डॉ. सुदीप सोलंकी** **9950854959** प्रभारी अधिकारी, वीयूटीआरसी, सिरोही	बकरियों में स्वास्थ रक्षा एवं विभिन्न रोगों से बचाव	16.03.2017
4	**डॉ. सुभाष यादव** **8290010544** प्रभारी अधिकारी, वीयूटीआरसी, कुम्हेर (भरतपुर)	नवजात बछड़ा–बछड़ी की कैसे करें देखभाल	23.03.2017
5	**डॉ. राजेश नेहरा** **9799474858** पशु पोषण विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशु आहार में पाये जाने वाले हानिकारक तत्वों की पहचान एवं निराकरण	30.03.2017

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने है।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। **1800 180 6224**